

in oder bei; mit loc. oder acc.: अग्ने वै सर्वा देवतां अन्वायताः TBa. 3, 8, 2, 3. सर्वेषु लोकेषु मृत्युवोऽन्वायताः 9, 15, 1. TS. 1, 6, 12, 1. ÇAT. Br. 1, 6, 2, 41. 7, 2, 7. 13, 1, 2, 9. संवत्सरं वा अन्वायन्वायतम् 12, 7, 2, 19. 14, 5, 2, 3. दूर्व्यं पितरोऽन्वायताः 6, 8, 9. KHAND. UP. 1, 10, 9. fgg. 11, 4. fgg. 2, 9, 2. एता एव (दिशः) क्षेत्रका अन्वायताः ÂCV. ÇR. 10, 10, 10. — caus. anreihen, folgen lassen; in Verbindung bringen, sich beteiligen lassen; mit loc. oder acc.: देवता एवास्मिन्वायतायति TBa. 3, 8, 2, 3. ÇAT. Br. 13, 1, 2, 9. कन्दसि यज्ञमन्वायातयति 3, 4, 23. ÇĀÑEH. BR. 12, 7. 24. 5. ÂCV. ÇR. 4, 11, 5. पुरोऽशेषु क्वीष्यन्वायातयेयुः 9, 2, 22. ÇĀÑEH. ÇR. 12, 9, 8. 13, 20, 9. 14, 3, 1. 5, 5.

— समा, partic. °यत् beruhend auf, abhängig von (loc.): आसौ प्राणाः समायता मम चात्रैकपुत्रके MBH. 3, 10484. 7, 5458. R. 7, 33, 30.

— उप med. betreffen: इदं त्विमं स पाप्मा नोपयतते ÇAT. Br. 8, 5, 1, 7.

— नि med. anlangen bei: नि या देवेषु यतते वसूयुः RV. 4, 186, 11.

— निम् caus. 1) fortreißen, fortschaffen, wegführen: संयुज्यमानानि निशम्य लोके निर्यात्यमानानि (= निपीड्यमानानि NILAK.) च सात्त्विकानि MBH. 12, 13789. पुत्रो निर्यातितः क्रोधात् (so die neuere Ausg., es ist aber wohl क्रोधात् zu lesen) HARIV. 4857. निर्यातयत मे सेनाम् MBH. 13, 610. असतो वपुष्टमो चैव निर्यातयत मे गृहात् HARIV. 11243. यमो वैवस्वतस्य निर्यातयति डुकृतम् । कृदि स्थितः कर्मसाती क्षेत्रज्ञो यस्य तुष्यति ॥ Spr. 2404. herausholen, herbeischaffen: गृहात् R. 6, 96, 5. — 2) herausgeben, schenken, ausliefern, zurückgeben: निवृत्तेषु च मेघेषु निर्यात्य जगतो जलम् HARIV. 4013. निर्यात्य मर्द्धिषं तस्य KATHĀS. 62, 224. SADDH. P. 4, 25, 6. M. 11, 164. न्यासम् MBH. 3, 16596. 5, 3979. fg. 4021. fg. HARIV. 2770. 4061. 6778. R. GORR. 1, 71, 23. 2, 117, 7. 5, 37, 8. 66, 24. 26. 89, 56. 6, 16, 69. 94, 21. 7, 30, 26. 98, 6. 8. med. 5, 76, 18. 7, 89, 10. MRĀH. 23, 9. वैरम् eine Feindschaft erwidern, Rache nehmen: रामस्तमपापेर्वैरं स्वयं निर्यातयामि वै R. 6, 33, 4. 3, 60, 33. MBH. 2, 2660. — 3) verbringen, verleben: चतुर्दश समा वीर वने निर्यातितास्त्वया R. 6, 104, 26. — Vgl. निर्यातक fg. und निर्यात्य.

— प्रतिनिम् caus. wieder ausliefern, zurückgeben MBH. 3, 13183. — Vgl. प्रतिनिर्यातन.

— परि med. umstellen, umringen PAÑĀV. BR. 7, 5, 6. 15, 3, 7. दाशराज्ञे परिपत्ताय विद्यतः RV. 7, 83, 8. AIT. Br. 2, 31. बृहो वा परिपत्ता वेन्द्रे त्रातारमुपधावति TS. 2, 2, 2, 5.

— प्र med. einwirken: प्र रश्मिभिर्यत्मानाः TBa. 2, 8, 2, 2. sich bestreben, sich bemühen um, bedacht sein auf, sich befeisigen; med. und act. (aus metrischen Rücksichten) mit loc. ÂCV. ÇR. 4, 12, 3. LĪTJ. 8, 8, 1. धर्मे HARIV. 2870. R. 1, 58, 21 (60, 24 GORR.). 2, 82, 10 (88, 10 GORR.). SUÇA. 1, 127, 14. ÇĀK. 113, 3, v. 1. प्रयतेतस्य रत्तणे MBH. 14, 1186. 3, 2726. 14417 (wo mit der ed. Bomb. भेदे प्रयतिष्यति zu lesen ist). HARIV. 5284. मया — तद्याख्यायो प्रयत्यते Verz. d. Oxf. H. 264, a, 20. अतः प्रयतितं रास्ये — मया तव MBH. 1, 5508. mit dat.: प्रयतेतार्थसिद्धये M. 7, 215. रास्याय MBH. 1, 3784. मोक्षाय 3, 14944. mit अर्थे, अर्थम्, क्तेत्वात् R. 2, 39, 7. 3, 57, 31. MBH. 4, 1205. HARIV. 1503 (act.). PRAB. 19, 9. BHĀG. P. 1, 5, 18. mit acc.: धर्मार्थयोगान्प्रयतति (so die ed. Bomb.) MBH. 5, 649. मखक्रियाम् । प्रयतते 14, 46. तस्मात्तत् (युद्धे) प्रयताम्यक्तम् HARIV. 8022. mit infin.: विज्ञेत् प्रयतेतारिन् Spr. 3242. MBH. 14, 343. fgg. RAGH. 8, 2. DAÇAK. in BENF.

Chr. 196, 13. BHĀT. 19, 15. तत्कर्तुं प्रयताम्यक्तम् R. 3, 68, 56. ohne Ergänzung VARĀH. BRH. S. 106, 2. प्रयतस्व यथाविधि MBH. 1, 4754. यथाशक्ति R. 3, 35, 17. प्रयतिष्ये तथा राजन्यथा श्रेयो भविष्यति MBH. 1, 2085. SUÇA. 2, 32, 18. ÇĀK. 18, 14. प्रयतमन्विच्छति प्रूलिनं मनः sich bestrebend, ganz bei der Sache seiend Spr. 4391. — Vgl. प्रयतितव्य fgg.

— संप्र med. sich bemühen um, bedacht sein auf: सिद्धये KĀM. NĪTIS. 10, 41.

— प्रति med. 1) entgegenwirken: रत्तासि ÇAT. Br. 9, 2, 2, 3. अश्रमपीडा यथा न भविष्यति तथा प्रतिपतिष्यामहे (v. 1. für प्रयति) ÇĀK. 18, 14. — caus. zurückgeben, erwidern: वैराणि, वैरम् so v. a. Rache nehmen MBH. 3, 14728. 9, 3256. — Vgl. प्रतिपातन.

— वि med. etwa in verschiedene Reihen bringen AV. 18, 1, 17. — caus. 1) anreihen, anbringen: त्रिवृत्तमेव यज्ञमुखे वियातयति TS. 5, 1, 4, 3. 3, 2, 2. 3. — 2) büßen: तद्दामनो व्रजयो पिशाचा वि यातयताम् AV. 5, 29, 6. — 3) peinigen, quälen: तं यमः पापकर्माणं वियातयति Spr. 2403.

— अघिवि caus. anreihen, anbringen KĀTH. 24, 8. 26, 10. 29, 9. 37, 16.

— सम् 1) act. vereinigen: सं श्रुधीयतश्चिद्यत्तयो मर्द्ध्वा RV. 6, 67, 3.

— 2) med. sich aneinander reihen: सं प्ररूपासो दिव्यासो अत्याः । कुंसा इव श्रेणिशो यतते RV. 4, 163, 10. सं दानुचित्रा उषसो यततम् 5, 39, 8. — 3) med. sich vereinigen, zusammentreffen, sich verbinden mit: सं भानुना यतते सूर्यस्य RV. 5, 37, 1. सं रश्मिभिर्यतते दर्शतो रथः 9, 111, 3. — 4) med. an einander gerathen, in Streit kommen: सं यन्मूकी मिथ्यती स्पर्धमाने तनून्चा प्ररूपासो यतते RV. 7, 93, 5. AIT. Br. 1, 14, 23. TBa. 1, 5, 2, 3. देवासुराः संयता आसन् TS. 1, 3, 4, 1. समयतत ÇĀÑEH. ÇR. 14, 23, 1. ÇAT. Br. 1, 3, 3. 17, 3, 5, 1, 21. KĀTH. 24, 10. 25, 6. KHAND. UP. 1, 2, 1. संयामं संयतिष्यमाणः AIT. Br. 8, 10. संयामे संयते TS. 2, 2, 2, 2. — 5) संयत् vorbereitet, ganz bei der Sache seiend, der seine Maassregeln getroffen hat, auf der Hut seiend, sich vorsehend: समरे MBH. 7, 5179. तथा युध्येत संयतो (v. 1. für संयतो) विजयेत रिपून्पथा M. 7, 200. HARIV. 8067. BHĀG. P. 10, 44, 41. सु° HARIV. 13389 (सुसंपन्न die neuere Ausg.). BHĀG. P. 8, 7, 2 (nach der Lesart der ed. Bomb.). अ° 6, 28. — Vgl. असंपत्.

— अभिसम्, partic. °यत् besorgt, gelenkt von: कृतोत्तमाः MBH. 7, 5173. अभिसंपन्न ed. Bomb.; °संपत् würde nicht zum Metrum passen; vgl. simpl. 3) a) am Ende.

— प्रतिसम् med. bekämpfen ÇAT. Br. 11, 4, 1, 3. partic. °यत् vollkommen vorbereitet, — gerüstet MBH. 7, 3534.

यत् 1) partic. adj. s. u. यम्. — 2) n. die Fussbewegungen des Führers beim Lenken eines Elephanten H. 1231. HALĀJ. 2, 67.

यत्कृत् m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 53, b, 23. falsche, gegen das Metrum verstossende Form.

यत्गिर (यत् + गिर) adj. = यत्वाच् RAGH. 9, 17.

यत्कर् म. nach SĀJ. = यमनकर्तृ; wenn zu यत् gehörig, etwa Vergelter: वेतीदिस्य प्रयता यत्कर्; RV. 5, 34, 4.

यतनीय n. partic. fut. pass. impers. von यत्: सदैव यतनीयम् । मुक्तौ man soll bedacht sein auf SARVADARÇANAS. 98, 7.

यतम् (superl. zu 1. य) pron. rel.; acc. sg. neutr. °सद्, nom. pl. m. °मे; welcher von Mehreren P. 5, 3, 93. Vop. 7, 96. इह प्र ब्रूहि यतमः सो अग्ने यो यातुधानः RV. 10, 87, 8. AV. 4, 11, 5. 5, 29, 2. 5. (यथाम्) तेषाम् ज्ञानिं यतमो वहेति 6, 55, 1. 8, 9, 17. त्रयो वरो यतमोस्त्वं वृषाषि तास्ते